उत्तर:

सबसे पहले यह समझना ज़रूरी है कि “मसीही” किसे कहते हैं। एक सच्चा मसीही वह है जिसने यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार किया है, अपने पापों से सच्चे मन से पश्चाताप किया है, अपने विश्वास की सार्वजनिक घोषणा के रूप में बपतिस्मा लिया है, और उस पर पवित्र आत्मा की छाप लग गई है (इफिसियों 1:13)।

चूँकि यीशु मसीह एक नए जन्मे विश्वासी के भीतर वास करता है, इसलिए यह धार्मिक दृष्टिकोण से असंभव है कि वह दुष्टात्माओं से अधिभूत (possessed) हो। यीशु पवित्र और शुद्ध है, और उसकी उपस्थिति हर प्रकार की दुष्ट आत्मिक शक्ति को निष्कासित कर देती है। पवित्रशास्त्र इसकी पुष्टि करता है:

1 यूहन्ना 4:4
“हे बालको, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उन्हें जीत लिया
है, क्योंकि जो तुम में है, वह उस से बड़ा है, जो जगत में है।” (पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

यह पद बताता है कि जो पवित्र आत्मा विश्वासी के भीतर है, वह संसार की किसी भी आत्मिक शक्ति से कहीं अधिक सामर्थी है।

2 कुरिन्थियों 6:14
“अविश्वासियों के साथ एक असमान जुए में न जुते रहो; क्योंकि धर्म और अधर्म में क्या मेल? या ज्योति और अंधकार में क्या साझेदारी हो सकती है?”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

यह स्पष्ट करता है कि पवित्रता और पाप एक साथ वास नहीं कर सकते। इसलिए, कोई सच्चा विश्वासी कभी दुष्ट आत्माओं से ग्रसित नहीं हो सकता।

फिर कुछ मसीही लोग दुष्ट आत्माओं से पीड़ित क्यों दिखाई देते हैं?

यहाँ हमें दो महत्वपूर्ण बातों में फर्क समझना चाहिए: दुष्टात्मिक अधिभूतता (Possession) और दुष्टात्मिक उत्पीड़न या हमला (Oppression/Attack)।

दुष्टात्मिक अधिभूतता का अर्थ है कि कोई आत्मा व्यक्ति के

अंदर रहती और उसे नियंत्रित करती है। यह एक सच्चे विश्वासी के लिए असंभव है क्योंकि मसीह उस में वास करता है।

दुष्टात्मिक उत्पीड़न या हमला का अर्थ है कि दुष्ट आत्माएँ बाहर से आकर मानसिक, आत्मिक या शारीरिक रूप से परेशान करती हैं।

ऐसे तीन मुख्य कारण हैं जिनसे विश्वासी दुष्टात्मिक उत्पीड़न का अनुभव कर सकते हैं:

1. आत्मिक अधिकार की समझ की कमी

कई मसीही इस सच्चाई से अनजान होते हैं कि यीशु ने उन्हें दुष्ट आत्माओं और शैतानी शक्तियों पर अधिकार दिया है।

लूका 9:1
“उसने उन बारहों को इकट्ठा करके उन्हें सब दुष्टात्माओं पर
और बिमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

यह अधिकार सभी विश्वासी के लिए उपलब्ध है:

लूका 10:19
“देखो, मैं तुम्हें सर्पों और बिच्छुओं को कुचलने, और शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार देता हूं; और कोई वस्तु तुम्हें
किसी रीति से हानि न पहुंचाएगी।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

जब कोई मसीही इस अधिकार को विश्वास में, यीशु के नाम से प्रयोग करता है, तो दुष्टात्माएँ उसे नहीं झेल सकतीं।

रोमियों 8:37
“परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

इसलिए, आत्मिक अधिकार को जानना और उसमें चलना बहुत आवश्यक है।

2. आत्मिक अपरिपक्वता

नए या कमजोर मसीही अभी भी अपने पुराने जीवन के व्यवहार, गलत

आदतों या अज्ञानता में बने रह सकते हैं, जिससे शैतान के लिए “खुला द्वार” मिल जाता है। बाइबल उन्हें नवजात पौधों की तरह बताती है जो आसानी से डगमगाते हैं।

आत्मिक विकास बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, पवित्रता और आराधना के माध्यम से होता है।

2 पतरस 1:5–10
“…तुम अपने विश्वास के साथ सद्गुण, सद्गुण के साथ समझ, समझ
के साथ संयम, संयम के साथ धीरज, धीरज के साथ भक्ति, भक्ति के
साथ भाईचारा और भाईचारे के साथ प्रेम जोड़ो। …यदि तुम ऐसा करते रहोगे, तो कभी ठोकर न खाओगे।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

यदि कोई इन बातों की अनदेखी करता है, तो वह अधिभूत तो नहीं होता, लेकिन उत्पीड़न का शिकार ज़रूर हो सकता है।

3. जानबूझकर किया गया पाप

अगर कोई व्यक्ति बार-बार जानबूझकर पाप करता है, तो वह शैतान को अपने जीवन में प्रवेश करने का अवसर देता है।

इफिसियों 4:27
“और न तो शैतान को अवसर दो।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

यदि कोई मसीही पश्चाताप के बाद पुराने पाप, जैसे शराब या व्यभिचार में लौटता है, तो वह आत्मिक उत्पीड़न को न्योता देता है।

यीशु ने इस खतरे के विषय में कहा:

मत्ती 12:43–45
“जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकलती है, तो निर्जल
स्थानों में विश्राम ढूँढती है पर नहीं पाती। तब वह कहती है, ‘मैं अपने घर में लौट जाऊंगी जहाँ से निकली थी।’ और लौटने पर पाती है कि वह घर खाली, साफ-सुथरा और सजा हुआ है। तब वह जाकर सात और आत्माएँ अपने से भी बुरी साथ लाती है और वे वहाँ वास करती हैं। और उस मनुष्य की दशा बाद में पहले से भी बुरी हो जाती है।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

यह स्पष्ट चेतावनी है कि बिना पश्चाताप के जीवन दुगुना खतरे में पड़ सकता है।

निष्कर्ष

एक नया जन्म पाया हुआ मसीही, जिसमें पवित्र आत्मा वास करता है, कभी भी दुष्टात्माओं से अधिभूत नहीं हो सकता। लेकिन वह उन्हीं से उत्पीड़ित, प्रलोभित या बाधित अवश्य हो सकता है।

ऐसे आत्मिक हमलों से कैसे बचें?

मसीह में मिली आत्मिक सत्ता को पहचानें और प्रयोग करें

परमेश्वर के वचन, प्रार्थना और आराधना में आत्मिक रूप से बढ़ते रहें

पाप से दूर रहें और निरंतर पश्चाताप के जीवन में चलें

बाइबल हमें आदेश देती है:

क्या एक मसीही में दुष्टात्माएँ हो सकती हैं?

इफिसियों 6:11–13
“परमेश्वर की सारी हथियारबंदी को पहिन लो, ताकि तुम शैतान
की युक्तियों के सामने टिके रह सको। …इस कारण परमेश्वर की
सारी हथियारबंदी को उठा लो, ताकि तुम बुरे दिन में सामर्थ
पाकर सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।”
(पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)

प्रभु आपको सामर्थ और स्थिरता दे ताकि आप उसकी सच्चाई में मज़बूती से खड़े रह सकें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp